16700

१- श्री सद्गुरु गणपति
2- श्री सद्गुरु स्वामी रामतीर्थ
३- पतञ्जलि पदनिर्णय
४- श्री विनयविलास
५- श्रीमच्चित्तसंवेद
६- विश्वविनय

जय सियाराम

* अथ *

श्रीसद्गुरुभावादर्श

व

श्री सतगुरु रूप माधुरी नखशिख

तथा

* जीव पीव मिलन सम्बन्ध *

जिनको

श्री अनन्त श्री स्वामी श्री रामवल्लभा शरण जी महाराज
श्री सतगुरु सदन निवासी श्री अवध सरयू तट
वासी स्वतंत्र विलाशी रसराज प्रकाशी
सुखराशी ने निर्माण किया

❀ उसीको ❀

श्री सिया मोहिनीशरण जी के गुरुभ्राता
श्री रामभगवान शरण जी सूतटोला,
बनारस सिटी ने प्रकाशित किया।

मुद्रक—
महेश प्रसाद, सत्यनाम प्रेस,
मैदागिन, बनारस सिटी।
तृतीयवार १००० प्रति * सम्वत १९८५

जय सियाराम

जय जय सियाराम

सद्गुरु दरश परस अघ नाशै ।

तब निज सहज स्वरूप प्रकाशै ॥

स्वामी राम सुजस जग, शरण हरण भय त्रास ।
सेवहिं सद्गुरु पद कमल, त्यागि सकल जग आस ॥

सतगुरु सदन सु सरयु तट, गोलाघाट प्रसिद्धि ।
राजहिं सुख सन्तति सहित, ऋद्धिसिद्धि नवनिद्धि ॥

श्री १००८ श्री रामवल्लभा शरणजी महाराज

श्री सद्गुरु सदन गोलाघाट,

श्री अयोध्या जी ।

S. P.

॥ श्रीगुरुचरण कमलेभ्यो नमः ॥

श्रीसीतारामाभ्यांनमः।

विचार करने से ज्ञात होता है, कि इस असार संसार से मुक्त होने के लिये केवल गुरु कृपा ही साध्य है, जैसा कि पूज्यपाद श्री गोस्वामीजी ने श्रीरामायणजी में कहा है (गुरु बिनु भव निधि तरै न कोई। जो विरञ्चि संकर सम होई॥) इत्यादि—

वर्तमान समय में यथार्थ गुरूभक्त शिष्य देखने में कम आते हैं, और जब तक यथार्थ गुरु भक्ति न होगी, तब तक प्रभु की प्राप्ति होना दुर्लभ है, इसलिये शिष्य को चाहिये कि श्रीराम जी से भी अधिक जान कर सकल भावना पूर्वक श्री गुरु चरण कमलों की सेवा करै, जैसा कि श्री रामायण में महर्षि श्रीवाल्मीकि जी ने श्री रामजी से कहा है, तुमतें अधिक गुरुहिं जिय जानी । सकल भाव सेवहिं सनमानी ॥ इत्यादि पुनः भागवते आचार्य्यमाम् विजानीया न्नावमन्येतकर्हि चित् । मर्त्य वुद्ध्याऽसूयेत सर्व देव मयो गुरुः॥ अर्थात् भगवत आज्ञा है, कि आचार्य्य को मेरे स्वरूप जानों, इसलिये ईश्वर गुरु में अभेद रखना परम सिद्धान्त है, सोई श्रुति भगवती कहती है, कि यस्यदेवे पराभक्तिर्यथा देवे तथागुरौ, पुनः यदादृष्ट्वा रामभद्रो जीवान् दुःखार्णवेगतान् । तदावैगुरु

रूपेण प्रादुभोवोभवत्प्रभुः । तस्मात् सर्व्वात्म भावेन गुरु मेवा श्रयेत् सुधी । अनायासेन तस्याशु महान्मोदः प्रजायते ॥ अर्थात् जब संसार सागर में जीवों को दुखी श्रीराम जी देखते हैं, तब श्रीगुरु रूप से निश्चय करके अवतार धारण करते हैं ॥ इत्यादि प्रमाणों से गुरु ईश्वर रूप ही हैं, चाहै कैसा भी गुरु हो, तौ भी शिष्य को चाहिये कि, गुरू में ईश्वर ही भावना करै, जैसा कि शांडिल्य संहिता के भक्ति खण्ड में कहा है—' एवं गुरूरपि विज्ञेयः क्रोधनो नृहरिःस्वयम् । लुब्धस्त्रिविक्रमोज्ञेयोद्रोब्धापरशुभृत् स्वयम् ॥ ज्ञानदो व्यास एवाऽसौ सत्यसन्धस्तु राघवः । विज्ञानदः कृष्ण एवासौ नाना लीला करः प्रभुः ॥ भक्तिदो नारदः साक्षात् तपोनिष्ठो महा मुनिः । इत्येवं भावना तस्य शिष्यैः कार्य्या यथा यथा, अर्थात् क्रोधी गुरु को नृसिंह रूप, ज्ञान देने वाले को व्यास रूप, सत्यवादी व जितेन्द्रिय को राघव रूप, नाना लीला करने वाले ज्ञान दाता को कृष्ण रूप, भक्ति देने वाले को सक्षात् नारद रूप, तपस्वी को ऋषि रूप, से शिष्य गुरू में भावना करै, भाव कैसा भी गुरु हो, तौ भी ईश्वर ही रूप जानै, इसी प्रकार से बहुत प्रमाण हैं, विशेष कहने से विस्तार हो जायगा, इस लिये थोड़े ही में सज्जन लोग जानैंगे, हमारे वैदिक सिद्धांत के मर्य्यादा पालन करने वाले परब्रह्म परमात्मा श्रीरामजी ने यद्यदा चरित श्रे ष्टस्तत्तदेवेत रोजनः । सयत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनु वर्तते ॥ अर्थात् बड़े लोग जिस आचरण को करते हैं, उसी को छोटे लोग भी देखा देखी किया करते हैं, इसी मर्य्यादा को उपदेश करने के

लिये व्यास पूजा, अर्थात् श्री गुरु पूनो के दिन परमाचार्य्य श्रीबशिष्ट जी का पूजन किया है, सोई सिद्धान्त इस ग्रन्थ में हमारे पूज्यपाद गुरु वर्य्य अनन्त श्रीस्वामी रामबल्लभा शरण जू महाराज श्रीअवध सरजू तट श्री सद्गुरु सदन निवासी स्वतन्त्र विलासी रसंराज प्रकासी सुखरासी ने सर्व लोगों के उपकारार्थ निर्म्माण किया है, इस अद्भुत चरित्र को सुहृद सज्जन लोग अवलोकन कर कृतार्थ हो मुझे भक्तिरस प्रदान करैं।

श्रीसीतारामार्पणमतुः सिद्धिरस्तु।

कृपाभिलाषी—

सियामोहिनी शरण।

जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम।

ओं मत् सद्गुरवे नमः।

* सोरठा *

श्रीसतगुरु करुनेश, क्लेश हरन रसदेस प्रद।
कीजे कृपा विशेस, यश हमेश वरणन करउँ॥
मोहि बुधिबलअतिथोर, ताते करों निहोर प्रभु।
हेरि कृपा दृगकोर, जोर देव विरचों कबित॥
जनम्यों योनि अनेक, नेकहुँ सुख पायो नहीं।
भवनिधि बूड़त एक, टेकिलेउ कर करन निज॥
दीजे अवध सुबास, बसों खसों जेहि बहुरि नहिं।
मगन होंउ रसरास, सियसिय पीय विलास वर॥

* दोहा *

निगम अगम अनुपम अमल, सीताराम विहार।
अनिर्वाच्य प्रभु परम गुरु, सुगम सु कृपा तुम्हार॥
मैं तव जोग न नाथ हौं, अघ मुरचित मन लोह।
कृपा अगिनि पट कपट जरि, नाम पार्स लसि सोह॥
मन कंचन पर करि दया, जेवर कोइ बनवाइ।
पिय प्यारी जुगपद कमल, अमल देउ पहिराइ॥
प्रिय प्रीतम पद सद परसि, सरस लहौंगी मोद।
हे गुरु कृपा कटाक्ष तव, विपिन प्रमोद विनोद॥

बरवा—अब हम निज जिय जानी ठानी टेक। श्री सतगुरु सुखदानी मानी एक॥ विपुल सही हैरानी हानी देर। मिल्यो न मोद निसानी या निज हेर॥ श्रीसतगुरु वर-

बानी आनी हीय। मिटि गइ सकल गलानी हानी छीय॥ श्री गुरु करुना सागर आगर मोद। आनँद नित सुखमाकर करत बिनोद॥ विहरत सरजू कूले फूले फूल। जन पर नित अनुकूले भूले भूल॥ क्या कहिये श्रीसतगुरु करुना कार। करत कृपा दीनन फुर भव भ्रम हार॥ मोसे दीनन पालन को जग और। शरण कियो ललि लालन कीजे गौर॥ मिल्यो पिया धनु पानी छवि कविनीय॥ राम राय सिय रानी कवि वरनीय॥ छन छन जिय अभिलाखैं लाखैं होय। देखैं छवि भरि आखैं राखैं गोय॥ बार बार बर मागैं रागै देव। युग-लबिहारिनि पागै छविरस देव॥ नव बरवा दुख हरवा हरवा प्रेम। पहिरैं सज्जन गरवा करवा छेम॥ ११॥

अरिल—श्री श्री सीताराम काम तरु नाम है। जन दायक अभिराम परम विश्राम है। अति कोमल मल हरन जुगल वर वरन हैं। हरि हाँ युगल विहारिनि विदित सुअ-सरन सरन हैं १ स्याम गौर करु गौर ठौर नहिं और जाइये॥ है सबको सिर मौर राम सिय नाम गाइये॥ यह भल औसर पाय हाय जनि वृथा गँवावै। हरि हाँ युगल-विहारिनि मुरसिदकी नित मेहर मनावै॥

* चौपाई *

जापर कृपा करैं गुरु देवा। तासन आप करावैं सेवा॥ गुरु महिमा महिमा को जानै। सेस सारदा कवि न बखानै॥ श्रीसत गुरु सूरति दृग दरसै। अति पावन पावन सिर परसै॥ पद सद रज अंजन दृग लावै। भ्रम विक्षेप कुरोग नसावै॥

जगत विषय दुरगंध भुलावै । गुरुपद नखरवि कमल फुलावै ॥
मोह निशा नासै दुति भासै । राम भँवर रस रसिक निवासै ॥
जीवन जन्म लाह इतनोई । श्रीगुरु परम कृपा बस सोई ॥
कोटिन जन्म जन्मि जग भरमै । कोटिन भांति विबिध कृत करमै ॥

* दोहा *

श्रीसतगुरु करुनेस की, बिन करुना सु निदान ।
यह भवरुज नाहिन नसै, करिय उपाय महान ॥

* सोरठा *

सकल उपाय अपाय, भयो गयो बल सबनको ।
तातें श्रीगुरुपाय, लगन लाय रहिये निकट ॥

* चौपाई *

यह कलिकाल कराल कुब्याला । गुरुपद रज गारुड़ी कृपाला ॥
बिनु सेये गुरु पदरज मन्त्रा । कबहूँ जीव न होइस्वतन्त्रा ॥
विविध कष्ट दुरगति अति तबलों । श्रीगुरु पद सेवै नहिं जबलों ॥
मातु पिता सुत बित हित दारा । यह है सब माया करजारा ॥
फँसो जीव अवलोकि दयाकर । हटकि छुड़ाय धाय लीन्होंकर ।
जबहिं कृपाल धरयो सिरपर कर । महामंत्र उपदेस दियो कर ॥
तबही नसे सकल दुख द्वन्दा । सतगुरु मया भयो निरद्वन्दा ॥
श्रीसतगुरु बानी रस सानी । हृदय समानी विपति नसानी ॥

* दोहा *

विन हित हितू कृपायतन, मोहिं तुम्हार भरोस ।
यह बालक जन दीन को, राखिय चरन परोस ॥

* चौपाई *

छन छन चरन सरोज निहारै । विषै वासना विविध बिसारै ॥
रसना निसि दिन नामहिं रटै । पिय पिय ज्यों चातक नहिंहटै ॥
नेम प्रेम अविचल कर दीजै । नेह मेह झरिलाय सुभीजै ॥
चरणाम्बुज अम्बुहिं नित पीजै । पुनि पदसदअति हितकर मींजै ॥
परसि महा मृदुमञ्जुल गाता । मोद बिनोद लहै सुखदाता ॥
पूरन पूर करो गुरु आसा । दूरि न जाय रहै पद पासा ॥
बँधो रह नित नेह सुदामहिं । भजै सदा गुरु सिय पिय रामहिं ॥
विहरै सदा संगही संगै । भरी रहै हिय प्रेम उमंगै ॥
निगम अगम गम रहितकहावै । सो गुरु कृपा सुगम दरसावै ॥

* दोहा *

आप चहौ हौं नहिं बहौं, रहों चरन लपटाय ।
गहों टेक होरील की, लहौं मोद अधिकाय ॥

* चौपाई *

यहि ते अन्य चहौं जो कोई । सो नहिं लहौं गहौं पद दोई ॥
तव करुनाकर नाहिंनअन्ता । हौं अघ उदधि अगाध अनंता ॥
दोउ छनछन प्रतिनाथविचारों । अतिहि सकुचि तव कृपा निहारों ॥
रे मति मन्द नीच मन मेरा । क्यों न होत गुरु पद हठि चेरा ॥
त्रिभुवनमें न कहूँ हित तेरा । मैं सब भाँति सकल थल हेरा ॥
यह जग काल गाल परि घेरा । ताते गुरु भजि होय निबेरा ॥
ऐस समय अब बहुरि न ऐ है । सतगुरु सुमिरि अभय पद पै है ॥
श्रीगुरु भनित सुपद सद गै है । सिय पिय रास विलास बसै है ॥

* दोहा *

श्री मिथिलेस सुनन्दिनी रघुनन्दन श्रीराम ।
सतगुरु बचन न मेटिहैं, भेटिहैं छबि अभिराम ॥

* चौपाई *

श्रीसतगुरु रहस्य अवलोकै । मन संकल्प विकल्पहि रोकै ॥
चित नित चिंतै गुरु उपदेसा । मन सों मनन सु करै हमेसा ॥
बैन वृथा एकौ नहिं बोलै । जनि खोवै यह स्वांस अमोलै ॥
करसों करै महल गुरु टहलै । श्रीसिय पीय मिलन हो सहलै ॥
षट रितु की बहुबिधि उत्साहै । करिय उमंग संग सिय नाहै ॥
ग्रीषम गत पावस ऋतु आयो । घन घमंड अवली नभ छायो ॥
बकुल पांति सोभा दरसायो । स्याम उरसि मनि दाम सोहायो ॥
मन्द मन्द गरजनि अति प्यारी । बरसि फोहारी त्रिबिधि बयारी ॥
हरित बरन बर भूमि सोहाई । पावस षटरितुकी छबि छाई ॥

* दोहा *

अवध सदैव सोहावनी, पावस अधिक उछाह ।
ताको हेतु बुझायके, कहौं सुनो जुत चाह ॥

* चौपाई *

कनक भवन सुन्दर अति सोहै । रचना विविधि सुविधिमनमोहै ॥
पिय प्यारी कर खास निवासू । नित्त सखी गन सहित विलासू ॥
रतन सिंहासन दंपति राजै । प्रिय प्रीतम अंसन भुज भ्राजै ॥
अंग अंग छबि बरनि सकै को । सेस सारदा थकै बकै को ॥
सिय पिय पियसियबदननिहारैं । यक टक रहैं पलक नहिं पारैं ॥

अधिकसनेह दुहुन दुहुँ ओरा । दोउ विधुमुख दोउ नैन चकोरा ॥
जूथेश्वरि श्री चन्द्रकलाजू । अवलोकति छबि ललीलला जू ॥
रसाचार्य श्रीहेमलता जू । जो जो जेहि उपदेस बता जू ॥
परम प्रीय श्री प्रीतिलता जू । युगल केलि सम्बन्ध रताजू ॥

* दोहा *

सोइ सोइ सेवा सहित सखि, ठाढ़ी हैं चहुँ ओर ।
बाढ़ी प्रेम उमङ्ग उर, लखत सु छबि तृनतोर ॥

* चौपाई *

बोली हँसि मिथिलेस सुनन्दनि । प्रीतमचित नवनित हित चन्दनि ॥
सुनिये जीवन प्रान अधारे । यह अति हिय अभिलाष हमारे ॥
विगत असाढ़ शुक्ल गुरु पूनो । पूजहिं चलि गुरुपद सद दूनो ॥
श्री सतगुरु कर अमित प्रभावा । सेस महेस रमेसहु गावा ॥
वेदहु भेद न जाकर पावा । सो सतगुरु जन हेत कहावा ॥
अतिहित सुनिप्यारी वरवयना । प्रीतम प्रेम भरे दोउ नयना ॥
मम तव मिलन हेत गुरु प्यारी । श्रीगुरु सम नहिं कोउ हितकारी ॥
ताते पूजन करहु तयारी । यह सुनि सखिन मोद मन भारी ॥
मंगल वस्तु सँवारन लागी । सब की मति गुरुपद रति पागी ॥
मंगल जल मज्जन करि सरजू । मंगल साज सजैं घर घर जू ॥
मंगल भूषण बसन सुहाये । मंगल मय दम्पति पहिराये ॥
मंगल अली भली सँग सोहैं । जिनछबि निरखिमदनतियमोहैं ॥

दोहा ।

मंगल अवध अवध्य अज, मंगल विरचि बनाय ।
मंगल केदलि रसाल सुचि मंगल झालर लाय ॥

* चौपाई *

मंगल चौक भांति बहु पूरी । मंगल गुरु पूजन रुचि रूरी ॥
मंगल दधि दुर्वा फल फूला । मंगल पूजन विधि अनुकूला ॥
मंगल दीप मनिन मय राजै । मंगल मय बाजन बर बाजै ॥
मंगल थार भरे वर भामिनि । ल्याई ढिग मङ्गल मय स्वामिनि ॥
मङ्गल वस्तु जौन श्रुति गाई । सब श्रीगुरु पूजन हित आई ॥
सामा पेखि मुदित मन स्यामा । मोद लहेउ लखि पिय सुखधामा ॥
सुभगा सुभग नालकी ल्याई । लली लालकी अति रुचि दाई ॥
तापर बैठि युगल सुर साँई । गुरु पूजन हियरुचि अधिकाई ॥
चले हरषि अंसन भुज धारे । रसिक जनन के प्रान अधारे ॥
श्रीचन्द्रकलादि संग सजि सौजैं । को कहि सकै उमङ्गैं मौज ॥
कोइ सखि छत्र चवँर सिर कीन्हे । कोई पताक छरी कर लीन्हे ॥
युगल बिहारिनि विजन दुरावै । लखि दम्पति छबि सम्पति पावै ॥

* दोहा *

अवध बासिनी नारि नर, सजि सजि साज समाज ।
भरे उमंगन आवहीं, श्रीगुरु पूजन काज ॥

* चौपाई *

अवलोकैं मग राम सिया का । पावैं अभिमत मोद हिया को ॥
करि करि गुरु सनेह की बातें । आनँद उमँगि उमँगि पुलकातें ॥
आप गये गुरु सदन समीपा । उतरि चले रघुकुल मनि दीपा ॥
बिपिन प्रमोद मोद मय धामा । श्रीसरजू तट प्रद विश्रामा ॥
तहाँ बस श्रीसतगुरु स्वामी । सुखद सुभाव सुअन्तर जामी ॥

नित चिंतैं सनेह सिय पीवहिं । दै उपदेश उबारहिं जीवहिं ॥
सुन्यो कि आये सियरघुनन्दन । जे आनँद केआनँद कन्दन ॥
प्रेम विवस नहिं नीति विचारा । उठे सुगुरु लखिनृपति कुमारा ॥
गुरु सनेह लखि प्रभु सुर साँई । चरन सरोज गही सुखदाई ॥
श्रीसतगुरु निज हृदय लगायो । सीसघ्रान करि कर परसायो ॥
दोउ दिसि भरे सुप्रेम प्रवाहा । को कहि सकै उदधि अवगाहा॥
परे रसिक सखि गन मन मीना । अभिमत पाय भये अतिपीना ॥

* दोहा *

सावधान ह्वै बचन वर, बोल्यो गुरु करुनेस ।
कौसल्यादिक रानि युत, आये श्रीअवधेस ॥

* चौपाई *

तव आगमन निहारि निहारी । लोचन नलिन भरे बर बारी ॥
श्रीदसरथनन्दन भाग्य विभव गति। सेस सारदा कहि न सके मति ॥
जिनके परब्रह्म तुम बालक। सुरनर मुनि त्रिभुवन प्रतिपालक॥
नेति नेति नित निगम जो गावा। सो प्रभु आय सुवन कहवावा ॥
परम गूढ़ सुनि वचन सुगुरके। श्रीरघुबर आनँद प्रद उरके ॥
तव गुरु शिष्य सुमुख्य बुलावा। जहँ नृप टिके सो तहाँ पठावा ॥
कहो जाय आये सिय रामू । जे अभिरामहुँ के अभिरामू ॥
पद सिरनाय गयो सो तहवाँ । श्रीसरजू निकुञ्ज रहे जहवाँ ॥
प्रभु आगमन नृपति सन भाख्यो। सुनत दृगन देखन अभिलाख्यौ॥
राउ सात सत रानि समेता । सेवक सेवकिनी सँग जेता ॥
चले विमल वर बाजन बाजे । विभव विलोकि सक्रसत लाजे॥
हाथ लिये सब मंगल सामा । सबै रटत सियराम सुनामा ॥

आये नृपवर भाग्य वलिष्ठा । धाइगहे गुरु चरन वसिष्ठा ॥
नृप सिरपर कर धरि गुरु ईसा । सुवनसहितनितमुदअवनीसा ॥
पाय असीस राउ कर जोरे । प्रभु तव कृपा सकल सुख मोरे ॥
पितु पद पंकज रामकीन्ह नति । सिव ब्रह्मादि न जान जासुगति ॥
खजन रामहि लीन सुअंका । मनहु गई पाई निधि रंका ॥
सीता सासुन पद सद लागी । लही असीस जानि बड़भागी ॥
सब निरखहिं सियराम सुभाऊ । अतिहिसरल सुखप्रदसबकाऊ ॥

* दोहा *

लखन भरत रिपुहन मुदित, निज निज प्रियन समाज ।
आय नाय सिर पाँय गुरु, लहि असीस मन काज ॥

* चौपाई *

पुनि पितु मातु चरन सिरनावा । अभिमत आसिषसबहीपावा ॥
पुनि सियराम पद्म पद भेंटे । प्रभु वियोग दुख दारुन मेटे ॥
ऊरमिला मांडवि श्रुति कीरति । सासुससुरपतिप्रभुसियप्रियअति ॥
सासु समीप वधू सबराजैं । पितु ढिग रामबन्धु जुत भ्राजैं ॥
जुरी समाज आज गुरु धामा । को कहिसकै महा अभिरामा ॥
बैठे सब श्री गुरु रुख जोहैं । सुख समुद्र बिच मन गज वोहैं ॥
गगन मगन सुर वरषैं फूला । गुरु वैभवलखिविधिमनभूला ॥
बेला सुमन विरचि बर बँगला । चहुँ दिसिलगेगुलाबनजँगला ॥
गुलदावदी लगी मिहरावैं । खिरकिन गुलेचींन छविछावैं ॥
जुही चमेलिन बेलि बनाई । झालरि विविधि फूलरचिलाई ॥
मध्य सिंहासन कंमल अष्ट दल । ताहिं विराजैं श्रीसतगुरु भल ॥

कोमल कमल अमलदल फरसैं । अतरन सिची सुगंधैं सरसैं ॥
अति आनन्द निरखि अवधेसा । उठी सुपूजन गुरू रसेसा ॥
सकल सभा जोरे करठाढ़ी । गुरुपदनखबिधुसुखनिधिबाढ़ी ॥
कौसल्यादि रानि दसस्यन्दन । श्रीसतगुरु पदकीन्हों वन्दन ॥
मृगमद मिश्रित केसरि चन्दन । भाललगायो गुरु सुखकन्दन ॥
सुमन सुगंध माल पहिरायो । धूप दीप नैवेद लगायो ॥
आरति हर सतगुरुकी आरति । करतनृपतिबहुमनिगनवारति॥
विविधि प्रकार बाजने बाजैं । जैजै दसदिसि पूरि अवाजैं ॥

* दोहा *

साष्टांग दंडवत करि, पाहि पाहि गुरु पाहि ।
प्रभुतव कृपाकटाक्ष तें, सकल सुलभ मोहि आहि ॥

* सोरठा *

श्रीगुरु दीन्हों माल, निज प्रसाद अहलाद मय ।
पुनि कर जोरि भुवाल, विनय करत गद गद गिरा ॥

* छंद *

नमो श्री गुरोः पाद पद्मं परेशं ।
अजं सच्चिदानन्द कन्दं रसेशं ॥
सदा सद्गुणानन्त युक्तिंहिसूक्तं ।
श्रुतं सद् सभा साधवानांहि मध्ये ॥
गुरो मोदकारं गुरो शोकहारं ।
गुरो कर्णधारं अपारे भवाब्धै ॥
हरं सर्व अज्ञं कृतं पूर्ण यज्ञं ।

सुविज्ञं गुरुं पुण्य पुत्र प्रदायं ॥
नतोहं पदं पद्म सद्म प्रमोदं ।
विनोदं ददातीति रामस्य नित्यं ॥
किमाश्चर्य्य मेतत्प्रसादात् गुरोर्मे ।
सुलभ्यं निगम्यं अगम्यं महज्जत् ॥
पदाम्भोजयुग्मे अलिर्मे मनस्तात् ॥
वरण्यं बरंदेहि चैतत् सुयांचे ॥

* दोहा *

प्रनत पाल आरत हरन, श्रीगुरु दीनदयाल ।
नितही रहै निहाल ये, बधुन सहित चहुँलाल ॥

* सोरठा *

एवमस्तु गुरुदेव, कहि निजकर नृप सीस धरि ।
सीयराम पद सेव, लेव लाभ निज जन्म को ॥

* छंद *

लहि आसिष हरषे आनन्द सरसे सुमन सुबर्षे देवा ।
दुंदुभी बजावैं हिय उमगावैं गावैं लावैं सेवा ॥
सुर विधिहि मनावैं मोहिं जग जावैं पावैं श्री गुरुएवा ।
धनि अवधनिबासी अति सुख रासी सुगुरु उपासी जेवा ॥

* दोहा *

पुनि २ सुर बरषैं सुमन, सुवन चिरंजीराय ।
श्रीसत गुरु पद अमलयुग, जिनहिय भाय अमाय ॥

* चौपाई *

सुनि २ गगन देव मुख बानी । मगन सभा सहनृप सबरानी ॥
बधुन समेत सुवन करि आगे । प्रमुदित गुरुहिं पुजावन लागे ॥
द्विजपतिनिनि गठिबंधन कीनो । नील पीतपट मिलन प्रवीनो ॥
सारद हेरि हेरि हिय हारी । उपमा त्रिभुवन नाहिं निहारी ॥
तदपि कहे बिन चित नहिं मानै । ताते कहत किये अनुमानै ॥
घन दामिनि मनु चंचलता तजि । परमप्रीतिजुतमिलीसाजसजि ॥
पुनि कछु कहौं मोर मन मानी । जनु तमाल चंपक अरुझानी ॥
रामलखनरिपुदवनसुभरतहि । नेमप्रेम कछु कहत न परतहि ॥
श्रीजानकि मांडवि उरमीला । श्रुतिकीरतिअतिप्रीतिसुसीला ॥
जगमगात छवि श्रीगुरु धामा । निरखिलजतबहुरतिअरुकामा॥
दुहुँदिसि सौजलियेसखिठाढ़ी । श्रीगुरु प्रेम पयोनिधि बाढ़ी ॥
सिय सिय पिय पूजत गुरु देवा । सुमन बृष्टि बरसत नभ देवा ॥
जनु चहुँवेद धरे सुभ देही । तृयन सहित गुरुपद अरचेही ॥
उपमा बहुरि कहौं मनमानी । जनु चहुँ धर्म सकल सुख खानी ॥
हरखित सुर दुंदुभी बजावैं । बर भामिनि कलरव सुर गावैं ॥
बहुविधिमिलितसुगंधनचन्दन । कमल करन लीन्हें रघुनन्दन ॥
प्रेमसहितलगाय गुरुभालहि । पायमोद हिय होत निहालहि ॥
पुनि सुगंधमय माल उठाई । पहिरायो श्रीगुरु सुखदाई ॥
गुरुसिरधस्योनवलदलतुलसी । लखिलखिगुरुसनेहहियहुलसी ॥
अरगजादि मिश्रित करिधूपा । दीप सुकरि धरि भोग अनूपा ॥
श्रीसरजू वर बारि सुअँचवन । करवायो श्रीगुरु प्रमुदित मन ॥
अतर सुगंध बिरचि तांबूलहि । गुरुहिं पवायो हर भव सूलहि ॥

* दोहा *

आरति हर गुरु आरती, करत राम श्री सीय।
सुखमा वरनि सिरात नहिं, अँग २ उमँग अतीय॥

* सोरठा *

चारिउ भाय सुभाय, प्रियन सहित आरति करत।
सोभा बरनि न जाय, श्रीगुरु शिष्य सनेह की॥

* चौपाई *

कहिन परत सुचिकर की फेरनि। सील सकोच भरे दृग हेरनि॥
श्रीगुरुछबिसियपियहियझलकै। श्रीसियपियछबिहियगुरुथलकै॥
अनुपम छटा छबीली छलकै। सकलसमाजसुलखिलखिललकै॥
सेस सहस मुख कहिनहिं जाई। मैं मतिमन्द कहौं किमि गाई॥
सो जानै जेहि कृपा करहिं गुरु। निवसैजेहिहिय यहसमाजफुरु॥

* दोहा *

यहि बिधि करि करि आरती, आरति हर परि पांय।
लीन्ह धूरि मुद भूरि प्रद, भाल नयन निज लाय॥

* सोरठा *

श्रीगुरु कृपा निधान, पानि सरोरुह सीस धरि।
देत सुभग बरदान, सदा चिरंजीवहु सकल॥

* चौपाई *

लखि लखि रामचन्द्र प्रिय भाई। वात्सल्य निधि हिय उमगाई॥
उठि बहोरि कर जोरि निहोरैं। श्रीसतगुरु बिधु नैन चकोरैं॥

सबबिधिनित हितरतगुरुस्वामी। मोहिंलखिनिजअनुचरअभिरामी
देहु कृपा करि यह बरदाना। करों सदा मैं तब गुन गाना॥
प्रीति प्रतीति रीति निरबाहक। भीति अनीति कुरीतिहि दाहक॥
श्रीगुरु फुर रघुकुल निर्माता। बालक पालक ज्यों पितु माता॥

❀ छंद ❀

रघुकुल निर्माता गुरु पितु माता सुखदाता जग स्वामी।
प्रभु भव भय भंजन जन मन रंजन गज्जन मद अभिरामी॥
मोहि लखि निज दासा राखहु पासा यह आसा अनुगामी।
पद सद रति दीजै प्रेम सुभीजै लीजै करत नमामी॥

❀ छंद ❀

नमो नमो नमो गुरुं परेश प्रेमदं प्रभुं।
रसेश क्लेशहं गुरुं कृपाब्धि कोमलं विभुं॥
अहेतु हेतु कर्तृतुं। समस्त लोक भर्तृतुं।
मनुष्य मुख्य धर्तृतुं। जनोघ शोक हर्तृतुं॥
तनय सुगाधि यज्ञ रक्षनं कृतं द्रुतं मया।
सुबाहु ताडुकादि दुष्ट हन्यतं त्वया दया॥
सुगौतम प्रिया पखान रूप कूप शोक में।
परी तरी प्रभाउ नाथ है प्रसिद्ध लोक में॥
ऋषय सुसंग गंग पेपि ह्वै उमंग अंग में।
विदेह धाम सी छटा नहीं कहीं अनंग में॥
सुवास दै नृपेस वेस प्रेम के तरंग में।
सबंधु हौं मुनीसहू सुजाय भूमि रंग में॥
जहाँ जुरे सुआय कै नृपेस देस देस के।

अनंत अंत है नहीं अनंत वेस वेस के ॥
सब्रह्म विष्णु संकरादि संग लै सुरेस के ।
समाज भ्राज चाप जो प्रताप है महेस के ॥
तिलांक त्यों उठ्यो न ज्यों लिखे सुब्रह्म अंक से।
लजाय जाय जाय ठाँय ठाँय बैठि रंक से ॥
प्रसाद पाद नाथ माथ नाय हौं मयंक से ।
प्रचण्ड दण्ड तोम तमै खण्डि ह्वै निसंक से ॥
विदेहजा सुमाल मेलि देव दुंदुभी हनी ।
बरात तात साजि भ्रात संग लै चले अनी ॥
बिवाहि आय औधही सुबन्धु हौं कहौं भनी ।
सुजैति जैति जैति जय कृपा गुरो सबै बनी ॥

* सोरठा *

प्रभु तव कृपा अपार, लहि हरि हौं भव भार सब ।
करि हौं जन निस्तार, श्री गुरु पद रज सीस धरि ॥

❀ श्रीगुरोवाच ❀

धन्य धन्य धनि धनि चहुँभ्राता । भव भंजन रंजन जन त्राता ।
धन्य धन्य तवपितु अरुमाता । धनि ते जग जिनकर तव नाता ॥
धन्य धन्य मिथिलेस दुलारी । चारि बहिन चहुँ बंधु पियारी ॥
जेहिभजिमुनिगुनि नामसुअरथा । तेहिसबहीबिधिभयेसमरथा ॥
सुनहु सभासद श्रुति मनलाई । नाम अर्थ कछु कहौं सुहाई ॥
अंत न चरित ललित सियकंता । जानत संत रसिक मुदवंता ॥
राम रमै सब सब जहँ रमहीं । जन अपराध अगाधहि छमहीं॥
सुभ लच्छन जेहि बस रघुराई । लक्ष्मन सुमिरिलक्ष गुन पाई॥

जेहिहियसरजलप्रेमसुहीना । तेहिं ध्रुव भरत सो भरत प्रवीना ॥
कामादिक रिपु प्रबल अपारा। रिपुहन सुमिरत होत सँघारा ॥

* दोहा *

सामान्यारु बिसेस पुनि, आज्ञा पालन तीनि ।
संत सु सेवा चौथ यह, जानैं रसिक प्रवीन ॥

* चौपाई *

सुनहु प्रियनकेनामहि अर्थहि। जो गुनिहोयअनर्थहि व्यर्थहि ॥
श्री जानकी सुरत्न जानकी । राम जानकी जान जानकी ॥
प्रभु वियोग से जेहि उर हिला । श्री उरमिला सुमिरि उरमिला ॥
श्रीमांडवी गुनन जग मंडित । जानत अर्थ समर्थहि पंडित ॥
श्रीश्रुतिकीरतिगुनश्रुतिगावहिं। निसदिनतदपि पार नहिं पावहिं ॥

* दोहा *

चहुँ गुन की चहुँ सक्ति ये, देखहु हिये विचारि ।
सक्ति विना गुन किमि रहे, गुन बिन सक्ति निहारि ॥

* सोरठा *

श्रीगुरु पूजा व्यास, युगल विहार बहार प्रद ।
बरन्यो कछुक समास, राम वल्लभा रहस रस ॥

* पद *

श्री अवध में उत्साह घर घर आज गुरु पूनो अहै।
पूजि श्रीगुरुदेव पद सद जन्म फल दूनो अहै ॥
दस आठ नव षट चारि मति अनुरूप मय चूनोअहै।

एक श्री गुरु स्वामि हित प्रद और नहिं सूनोअहै॥
जबतक मिले गुरुदेव नहिं तबतकहि सिरधूनो अहै।
अब तौ राम सुवल्लभा फल बोये बिन लूनो अहै॥

* चौपाई *

यहविचारिसियरामहि ध्यावहु । छबिपियूषसबनिजचखण्यावहु॥
आज अहै गुरु पूरनमासी । परिकर सहित खवास खवासी॥
घनघमण्डनभ दृगलखिलीजै । झूलन झूलि सबै सुख दीजै॥
सुनि मुसुकाय सीय रघुराई । प्रमुदित श्रीगुरु पद सिर नाई॥
प्रथम झूलिये आप सुस्वामी । तव प्रसाद सबविधि अभिरामी॥
यह सुनि श्रीगुरु झूलन सोहे । सुछवि बिलोकि चराचर मोहे॥
दुहुँदिसिप्रियप्रीतमहि झुलावें । गुरु प्रभाव अति लखि सुखपावें॥
बैठे नेह हिंडोरे झूलैं । दंपति सुख सम्पति अनुकूलैं॥
कबहुँ सुझूलैं कबहुँ झुलावें । परिकर तन मन मुद सरसावें॥
कोइ गावै कोइ वाद्य बजावै । कोइ नाचै कोइ भाव बतावै॥
सतगुरु सदन सरजु तर तीरे । सीतल मंद सुगंध समीरे॥
रसिक समाज सुछवि रसपीवै । सब विधि भयो कृतारथ जीवै॥

* दोहा *

सिय मोहनि पिय मोहने, अँग अँग प्रभा अपार ।
झूलन भूलन जोग नहिं, युगल बिहार बहार॥

* पद झूलन *

आजु झुलाइहौं पिय तोको । हिय अभिलाख लाख भाँतिन सों, है जीवन धन मोको॥ चंचलता चातुरी चलन

चख, चारु चरित अवलोको। लैहौं लाह ललित लोयन लखि, चखि रति रस दुति दोको ॥ हिलि मिलि हलन ललन लोयन वर, सुनि सजिहौं सुख थोको । श्री युगल अनन्य अली निवछावरि, करि दैहौं सब लोको ॥ १ ॥

आजु गुरु स्वामि अभिराम झूलन लगे। नवल नवनेह सुहिंडोर रस डोरि वर, प्रीति पटरी परम प्रभा जेहि जग मगे ॥१॥ बरन बरनेस हर क्लेस रस देस प्रद, अतिहि करुनेस आवेस अँग अँग जगे । गौर अरु स्याम अभिराम सुखधाम वसुजाम सियराम गुन ग्राम जस रस पगे ॥२॥ भानु ससि अग्नि कर हेत भवसेत पर, देत मुद केत अनहेत कृत अघ भगे। नित्त उपदेश सु रसेसही करत प्रभु सेस सेसीय सनबंध प्रभुजन सगे ॥३॥ पेखि मृदु माधुरी हीय अवरेखि जेहि, तेहि न कामादि खल भाँति काहू ठगे। युगल सुविहारिनी युगल सुविहार सद, सदन श्री अवध वर वास नितही मँगे ॥ ४ ॥

झूलैं श्री सतगुरु नाम हिंडोरे। खंभ दंभ हर प्रीति प्रतीतिहि, स्वाँस अमोल सुडोरे ॥ १ ॥ मन प्रमोद बन सघन सुहावन, तरु असोक दुति जोरे। चिंतन चरित चारु चित चौकी, चमकनि प्रभा अथोरे ॥ २ ॥ अंगन अंग उमंग रंग बहु, सरधा सरजु हिलोरे। खट बर बरन हरन खट खटका लटका संत सजोरे ॥ ३ ॥ प्रेमा परा आदि अलि अवली झोकैं झुकैं दुहुँओरे। श्रीयुगल विहारिनि अनुपम झूलन झूलिय प्रभु दृग मोरे ॥ ३ ॥

श्री सतगुरु महराज बरन बर भूलन भूलैहो। परिकर गन मन मुदित बिलोकत प्रभु अनुकूलैहो॥ रेफ विन्दु आनंद कन्द सद, सदन मदन हर सूलैहो। जीव पीव संबंध प्रबरधक, मध्य श्रीगुरु मुद मूलै हो॥ २॥ नव खट चारि पुकारि कहत नित, उपमा नहिं सम तूलैहो। गुरुपद नख रबि निरखि कमल हिय, युगल विहारिनि फूलैहो॥ ४॥

भूलैं जानकी सुबर बर बरन हिंडोर। लखि लखि छबि छकि जकि रही मति मोर॥ अर्द्धमात्रा भवन सुख कहै को अथोर। ह्रस्व दीरघ अकार जुग खंभ अति जोर॥ अल मधुर मकार में अकार जो मिलोर। दिव्य गुन गन मंजु लीला निधिहो हिलोर॥ विंदु वेलन अधार सर्वशक्तिद उजोर। प्रीति पटरी सुप्रीतिलता जीवन है मोर॥ प्रेमा परासु झुलावैं गावैं गुन स्याम गोर। हिय युगलविहारिनी के बसो निसिभोर॥ ५॥

* दोहा *

उर गुरु महिमा के सदन, जड़े अबोध किँवार।
ताली गुरु उपदेश करि, उघरयो भाव भँडार॥ १॥

* कवित्त *

श्री गुरुपद अमल कमल सु बिकासे हैं। कृपाभानु गुरुजन हीय बर व्योम उदै प्रबल अबिद्या महा निसा तम नासे हैं। काम कोह मोह द्रोह कैरव सकुचि मन बिमुखन मन कोट ओट में निवासे हैं॥ दासन अलीन लयलीन सुप्रवीन पीन हीन खेद वेदन प्रमोद से विलासे हैं। युगल विहारिनि

सुमानसर अच्छ स्वच्छ गुरुपद अमल कमल सुविकासे हैं॥ १ ॥

गुरुपद रज बार बार बलिहारी है। जोनि बहु जनमि जनमि जाँच्यो जाहि जाहि जननी जनकहूँ न विपति निवारी है। करम विविध कृत पायों न सुहित बित इत उत कितौ बार धाय २ हारी है॥ अतिहि अगाध ब्याधि सलिल जगत सिंधु बूड़त निहारि धाय गुरु कर धारी है। युगल बिहारिनी सुपाय सीय सीय पीय गुरु पद रज बार बार बलिहारी है॥२॥

गुरुपद पदुम पराग पर बारि हौं। सीय राम धाम सुख हर दुख चन्द्र मुख नैनन चकोरिनि से नितही निहारि हौं। और सब जग आस त्रास प्यास मृगजल खासही बिसारि दासवत अनुसारि हौं ॥ अवध सरजुतट सोम बट बन बसि गुरु दिये नाम धन सोई हिय धारिहौं। युगल विहारिनी सु तन मन धन सब गुरुपद पदुम पराग पर वारिहौं ॥३॥

गुरु पद रज सों सकलसाज साजिहौं। कलि न विराग जप जाग तप त्याग व्रत और सब साधन उपाधन सों भाजिहौं नट वट गतिन बिहाय रटि सीय पीय नाम सुख धाम स्याम गौर छबि छाजिहौं॥ सरजु सुतट बट सोम छाँह छैल जुत छमकि रमकि रास मंडल सुभ्राजिहौं। युगल विहारिनि सुअंजन सों आँजि दृग गुरुपद रज सों सकल साज साजिहौं॥४॥

गुरु पदरज जन सुजन सुसाज है। भवनिधि अगम अपार पारावार नाहिं ताहि पार जाइबे को सुखद जहाज है। विषय विपिनि मन मगन उड़त खग ताहि मारिबे को रज प्रेम वरबाज है॥ तिलक लगावै भाल पावै लली लाल हाल बसीकर मन्त्र यह बस रघुराज है। युगल बिहारिनि सी दीन प्रति पालक ये गुरु पदरज जन सुजन सुसाज है॥५॥

गुरु पदरज चित चातक को हित है। सरग पताल जग भूमि घूमि घूमि घूमि नाच्यों जाच्यों पाँचहू न पायो हित बित है। सीय पीय रटनि डटनि निज प्रेमपन नेम अविचल छेम हेम नव नित है॥ देवी देव दानव समुद्र सरि कूप चूप भयो इन दिसि हम जानी ये अहित है॥ युगल विहारिनि सु प्यारी प्यारे प्यार प्रद गुरु पदरज चित चातक को हित है॥६॥

गुरु पद धूरी तौ सजीवन की मूरी है। अमल अदाग दाग हरन सुभव रुज सुजन सुसाज पर प्रेम परिपूरी है। विधि परपंच पंच रचित न रंचसुख खलु कलिकाल ख्याल जाल हाल तूरी है॥ निगम अगम जो बिहार सिय सिय पिय सुगम कृपा सों करि कीन्ही सु हजूरी है। युगल विहारिनि युगल दृग बसै चित गुरुपद धूरी तौ सजीवन की मूरी है॥ ७॥

गुरु पदरेनु तौ हमारे काम धेनु है। अभिमत दायक सहायक सुदीन जन भाव प्रद भायक के सब सुखदेनु है। मोसे दीन खीनन मलीनन की रच्छनीय दच्छ स्वच्छ बरनसु दुख हरिलेनु है॥ प्रगट प्रभाव है प्रतच्छ अच्छ देखियत विधि हरि हर बंदनीय सु बरेनु ह। युगल बिहारिनि सुभक्ति प्रेम पयद है गुरुपद रेनु तौ हमारे काम धेनु है॥ ८॥

गुरु पदरज तौ हमारे कल्पवृक्ष है। समन कराल कलि-काल काल ब्याल गति दमन मनोज मद सुजन सुरक्ष है। धर्म अर्थ काम मोक्ष फलन फलित चारु साँचि लिखि कहौं अक्ष देखिये प्रतक्ष है॥ छाँह अति सुखद बिहार नाह जान-कीस लाह अलि लोचननि दाह हर स्वक्ष है। युगल बिहा-रिनि युगल रस रास प्रद गुरु पदरजतौ हमारे कल्प वृक्ष है॥९॥

गुरु पदरजहि प्रभाव तो अथोरी है। सेस न गनेस न महेस न रमेसहूँ न सकहि सुरेसहू न सारद करोरी है। मिथिलेस यज्ञ सर्वज्ञ भूप विज्ञ विज्ञ आये तिहुँपूर सिवचाप मुख मोरी है॥ तहाँ दसरत्थ के दुलारे राम संभुधनु गुरु पदरज सिरधरि तुर तोरी है। युगल विहारिनी की स्वामिनी सिया जू पाई गुरुपदरजहि प्रभाव तो अथोरी है॥ १०॥

गुरुपद रेख रेख मेटत है भालकी। जाहिर जहान में अमान मान प्रद सब बद बेद बानी बर बिरद कृपाल की। बैन चैन ऐन सम अनत लगै न कहूँ अभिमत दैन रसरास लली लाल की॥ नेम प्रेम छेम हेम झलक पलक माँहि विघन समन गति हरि कलिकाल की। युगल विहारिनी निमेख तजि देखे नित गुरुपद रेख रेख मेटति है भालकी॥११॥

राम गुरु पादुका बरद अहलादुका। पूजे जेहि मन बच करम भरम हर सरम सकोच सोच समन विषादुका। मंजन कराय हिया रंजन सुहोत ध्रुव पुष्प गंध धूप दीप दमन प्रमादुका॥ गुरपद पीठि अम्बु पाय दिव्य दीठि खुलै परसाद स्वाद अति अमी कमी स्वादुका। युगल विहारिनी भरथ समरथ जानै राम गुरु पादुका बरद अहलादुका॥ १२॥

चहुँ ओर सुजन चकोर ठौर ठौर सोहैं जोहैं यकटक छबि सरद मयंक गुर। अंडकोस औध ब्योम बँगला दुरास हर अति सावकास जन तम तोम नास कर॥ तारा गन साधन करत अवराधन रहित भव बाधन सुध्रुव पद लहे फुर। सीय राम सुजस सुधासों चैन ऐन दैन युगलविहारिनी सुबैन बद बेद धुर॥ १३॥

श्रीगुरु कृपाल करुनेस जो न होते राम भव निधि प्रवाह हमै पार को लगावतो। अमित जनम अघ ओघ ताप तापित ही प्रेम अंबु सींचि ताप कौन मो नसावतो॥ अवध प्रभाव अवलोकिकै सिहाहिं ब्रह्म मानस सरित तट हठि को बसावतो। सप्त कोटि महामंत्र मंत्रराज स्वामि प्रद अब राम बल्लभाशरन कहवावतो॥ १४॥

* सवैया *

दानि शिरोमनि श्रीगुरुदेव विहाय तुम्हैं केहु जाँचो नहीं है। साँची कहौं पद पद्म गहौं सुख सद्म रहौं हिय आस यही है॥ जग जन्म अनेकन बार लई दुख खान मई दुख दाह दही है। युग्म विहारिनी स्वामि द्रवो अब कंत सुपंथ निहारि रही है॥ १५॥

मन या मलयागिरि को करिकै चित चन्दन श्रीगुरु कै अरचा। घृत नेह सुवर्तिका बारि भले चित वृत्ति सुवित्त करै खरचा॥ बपु देवन दुर्लभ या लहि कै धृग जीवन श्रीगुरु जो न रचा। गुरु आश्रित राम सुवल्लभा व्है सुरहस्यहि पावन ले परचा॥ १६॥ श्रीसीताराम सीताराम।

सोरठा—सब्बोंपरि सिद्धांत, भ्रांतिहरन चितसांति कर।
भजहु नाम सियकांत, श्रीगुरु जानकि बर बरन॥
परम्परा मतएक, दूसर मत पंथाइ कर।
देखहु करि सुबिबेक, सबके मतिमें मुख्य गुरु॥

दोहा—अमितचरितगुरु सीयबर, इति लिखते डर होय।
याते इति नाहिन लिखी, लिखीसो लखिहगजोय॥

मि० फागुन शु० १५ श्रीमंगलवार सं० १९८४